आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2748 • उदयपुर, सोमवार 04 जुलाई, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

सुगम हुई नरेन्द्र के जीवन की राह

जिन्दगी, उम्र और हालात के किस मोड़ पर कब कैसी करवट ले, कोई नहीं जानता। सब कुछ बदल जाता है, सिर्फ कुछ ही पलों में। मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिला के जमुड़ी कस्बे के नरेन्द्र रौतेल (32) के साथ वक्त ने कुछ ऐसा ही किया कि रफ्तार से चल रही जिन्दगी को अचानक ब्रेक लग गया, ट्रेन के पहियों ने दोनों पैर उससे छीन लिए। नरेन्द्र 2016 में उड़ीसा के रेडाखोल में एक भवन निर्माण कम्पनी में सुपरवाईजर का काम करता था। नोटबंदी के दौरान वह घर पर पैसे भेजने के लिए ट्रेन से बैंक के लिए निकला। बामूर रेलवे स्टेशन से थोड़ा पहले सिगनल न मिलने से ट्रेन रूकी हुई थी। पैसा भेजकर कार्यस्थल पर जल्दी पहुंचने की दृष्टि से वह ट्रेन से वही उतर ही रहा था कि ट्रेन चल पड़ी।

नरेन्द्र के दोनों पांव पहियों की चपेट में आ गये। इलाज के दौरान दोनो पैर घुटने के नीचे से काटने पड़े। भुवनेश्वर, दिल्ली और मध्यप्रदेश में दो वर्ष तक इलाज और मदद के लिए चक्कर लगाये पर सब जगह निराशा ही मिली। इसी दौरान भाई की मौत, भाभी का अन्यत्र चले जाना और खुद की दिव्यांगता दिन ब दिन घर की दयनीय दशा का कारण बनती जा रही थी। तभी उसे नारायण सेवा संस्थान की जानकारी मिली। वह 2019 में पहली बार संस्थान में आया जहां संस्थान की निदेशक वंदना जी अग्रवाल और प्रोस्थेटिक एण्ड ऑर्थोटिक विभाग प्रमुख डॉ. मानस रंजना साहू ने हौसला दिया। कृत्रिम पांव लगाए, चलने की ट्रेनिंग दी साथ ही उसे कम्प्यूटर का बेसिक प्रशिक्षण दिया गया। 6 मार्च 2022 को संस्थान में ही सिलाई सीख रही विकलांग नीलवती के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। कुछ दिन पहले नरेन्द्र ने संस्थान से अनुरोध किया कि पति–पत्नी संयुक्त व्यापार शुरू कर परिवार के 8 जनों का भरण–पोषण करना चाहते हैं। इसके लिए उसे अपने गांव से 2–3 किलोमीटर रोजाना आना–जाना होगा और इतनी दूरी कृत्रिम अंग के सहारे तय करना दूभर है। संस्थान ने दिव्यांग नरेन्द्र के परिवार को सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए 6 जून को करीब एक लाख की लागत की बेट्री ऑपरेटेड मोटराईज्ड व्हीलचेयर निःशुल्क भेट की। जो सड़क और घर दोनों जगह काम आ सकती है। मदद पाकर नीलवती और नरेन्द्र मुस्कुरा उठे।

कृत्रिम पैर पाकर नफीसा खुश

कोलकता के मिलनशेख (33) के घर नफीसा का जन्म हुआ। परिवार में खुशी का माहौल था। लेकिन जब उसे करीब से देखा तो परिवार में मायूसी छा गई। पता चला कि जन्म से ही बायां हाथ और पैर अर्ध विकसित है। माता–पिता की चिन्ता दिन–ब–दिन बढ़ती गई। खेती करने वाले पिता का एक–एक दिन काटना मुश्किल होने लगा। दिव्यांग बेटी के इलाज के लिए जगह–जगह जाने लगे लेकिन धन के अभाव में हर जगह निराशा ही हाथ लगी। कुछ महिने पहले परिजन नफीसा को लेकर कोलकाता के पोलियो हॉस्पिटल में इलाज हेतु गए तो डॉक्टर ने कहा–यह कभी चल नहीं पाएगी। व्हीलचेयर पर ही इसका जीवन निर्भर रहेगा। माता–पिता हताश होकर घर लौट आए। एक दिन सोशल मीडिया के जरिए पता चला कि उदयपुर में नारायण सेवा संस्थान में दिव्यांगों का निःशुल्क में इलाज होता है तो उनके दिल में एक आस जगी।

संस्थान के सम्पर्क कर अपनी बेटी की व्यथा सुनाई। 3 जून 2022 को नफीसा को लेकर माता–पिता संस्थान आये तब संस्थान की चिकित्सकीय टीम ने जांच की और पैर का नाप लेकर निःशुल्क कृत्रिम पैर बनाकर बेटी को पहनाया और कुछ दिन उसे चलने की ट्रेनिंग दी गई। नफीसा सुल्ताना मुस्कुराते हुए आराम से जब चलने लगी तो माता–पिता के आंखों से खशी से खुशी के आंसू बह निकले।

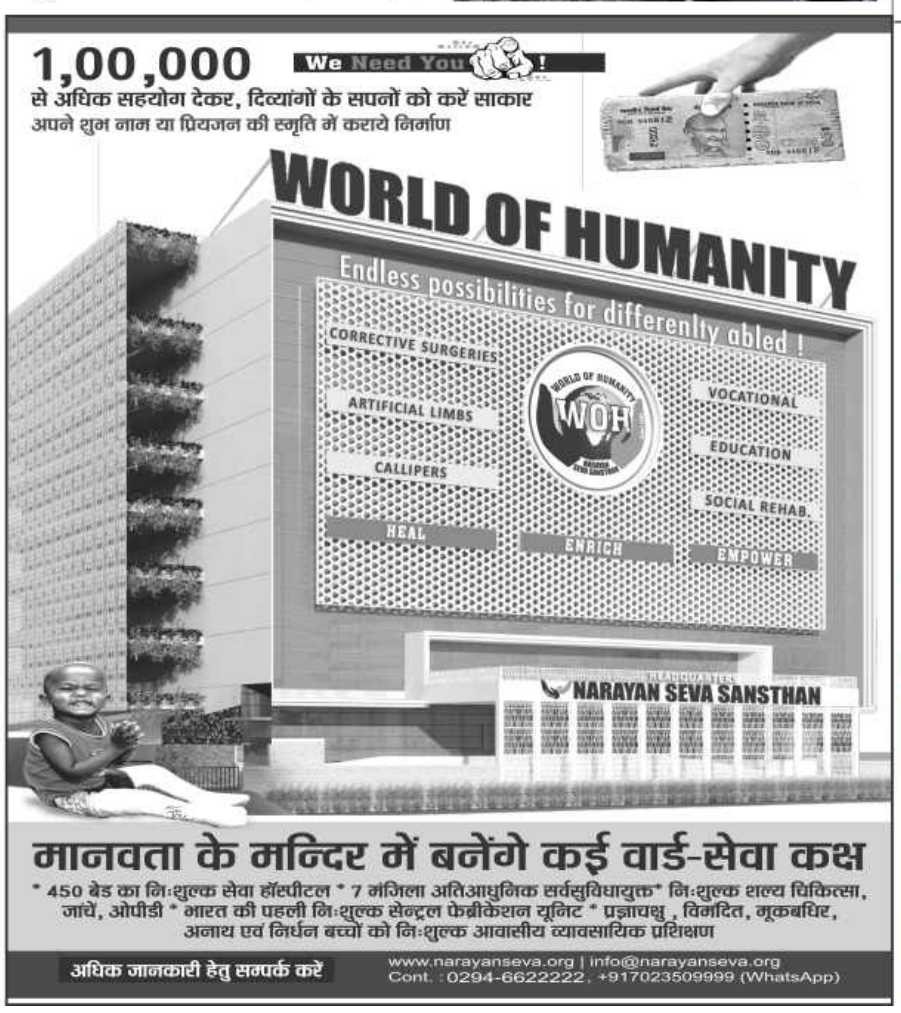

देश के विभिन्न प्रदेशों में निःशुल्क सेवा शिविर

होशंगाबाद – लायन्स क्लब, ग्वालियर आस्था के सहयोग से 29–30 मई को अग्निहोत्री गार्डन होशंगाबाद (मध्यप्रदेश) में आयोजित कृत्रिम अंग वितरण शिविर में 135 दिव्यांगजन को कृमित्र अंग व 32 को केलीपर वितरित किए गए। मुख्य अतिथि के रूप में भागवताचार्य पं. सोमेश परसाई जी का गरिमामयी सानिध्य प्राप्त हुआ। अध्यक्षता धनलक्ष्मी मर्चेन्टडाइज के प्रबंधक श्री समरसिंह जी ने की। विशिष्ट अतिथि रोटरी क्लब के अध्यक्ष सर्वश्री प्रदीप जी गिल्ला, विपिन जी जैन, शील जी सोनी, राजीव जी जैन व समीर जी हरडे थे। संयोजन श्री आशीश जी अग्रवाल ने किया। संस्थान की ओर से अस्थिरोग विशेशज्ञ डॉ. सिद्धार्थ जी लाम्बा, पी.एंड.ओ. डॉ.रामनाथ जी ठाकुर व प्रभारी हरिप्रसाद जी लढ्ढा भी उपस्थित थे।

शेगांव – महाराश्ट्र के बुलढाणा जिला के शेगांव में 29–30 मई को रोटरी क्लब के सहयोग से कृत्रिम अंग वितरण शिविर सम्पन्न हुआ। जिसमें संस्थान के पी.एंड. ओ. डॉ. नेहांश जी मेहता व टेक्नीशियन भंवरसिंह जी ने 142 दिव्यांगजन को कृत्रिम अंग व 29 को केलीपर पहनाए। माउली संस्था के अध्यक्ष श्री ज्ञानेश्वर जी पाटील मुख्य अतिथि थे।

अध्यक्षता उद्यमी श्री रमेशचन्द्र जी ने की। विशिश्ट अतिथि सर्वश्री विजय कुमार जी, रोटरी क्लब के अध्यक्ष आशीश कुमार व श्री दिलीप जी भूतड़ा थे। अतिथियों का स्वागत संस्थान की शेगांव भाखा के संयोजक श्री नंदलाल जी मूंदड़ा ने किया। प्रभारी मुकेश जी शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। माहेश्वरी भवन प्रांगण में आयोजित शिविर में सुनील जी श्रीवास्तव, कपिल जी व्यास, हरीश जी रावत, प्रवीण जी यादव आदि ने व्यवस्था में सहयोग किया।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

भगवान श्रीराम ने कहाँ अभी रहो–रहो हे नरश्रेष्ठ, हे शेष अवतार लक्ष्मण भाई, आपने उर्मिला जी को भी अयोध्या में छोड़ा। मेरे लिए आपने सिंहावलोकन करते है कभी कि

उठी ना लक्ष्मण की आँखे,
झकड़ी रही पलक पांखे।
किन्तु कल्पना घटी नहीं,
उदित उर्मिला हटी नहीं।।
खड़ी हुई अर्न्तस्थल में,
पूछ रही थी पल–पल में।

सोच रही थी मैं क्या करुं? मैं चलूं आपके साथ और लक्ष्मण जी ने कहा– रहो –रहो हे प्रिय रहो, यह भी मेरे लिए सहो।

और अधिक क्या कहूं सहो।

ऐसी उर्मिला जी को भी जिन्होंने अयोध्या में छोड़ा और जो लक्ष्मण राम भगवान के साथ पधारे। वो लक्ष्मण जी खड़े हो गये। इधर रावण को मालूम पड़ा कालनेमी मारा गया। संजीवनी बूटी आ गयी। लक्ष्मण जी उठ खड़े हो गये। उनकी मूर्छा टूट गयी अब तो रावण पछतावे। अरे मेरा तो बना बनाया काम बिगड़ गया। भाया तूं काम बिगाड़ने वाला है, तेरी आदत काम बिगाड़ने की है काम बनाने की नहीं है। सजन वाला नहीं है रावण तूं विध्वंस वाला है। एक छोटे बच्चे ने गीली रेत पर पैर लगाकर एक मकान बना लिया उसमे अंगुली के छेद से खिड़कियां निकाल ली, एक दरवाजा भी निकाल लिया। फिर पिताजी के पास आया पिताजी –पिताजी अब अपने को किराये के मकान में नहीं रहना अपने घर का मकान बन गया। और बड़े भाई ने एक लात मारकर के ढ़हा दिया और बोले पिताजी सृजन बताओ मुझे सृजन पर लेख लिखना बेटा। तूने विध्वंस कर दिया। इसने सृजन किया था तूने विध्वंस कर दिया इसने बनाया था तूने बिगाड़ दिया। ऐसे बिगाड़ने वाले रावण की कोई जय नहीं बोलता , कोई कुम्भकर्ण की भी नहीं बोलता। कुम्भकर्ण कितना भी बड़ा हो 6 महिने सोता है एक दिन जगता है। फिर भैंसे लाते हैं उठते ही कहता रावण जी आपने अच्छा नहीं किया बड़े भाई राम तो भगवान हैं आपने सीता जी का हरण करके अच्छा नहीं किया। विभिशण जी भी मिले। विभीशण जी को धन्यवाद भी दिया और बोला मुझे अपना–पराया नहीं सूझता है विभीशण तूं जल्दी से चला जा कही तेरे पर हाथ उठ गया। कहीं तेरे पर तीर चल गया। लाला कुम्भकर्ण का युद्ध आप सब जानते हैं भगवान ने उसके सिर काटे उसके धड़ के दो टुकड़े किए। उसके हाथ काटे।

सम्पादकीय

ईश्वर सबका सृष्टा है। उसके सृजन में यों तो पूर्णता होती है, किन्तु कभी–कभी किसी कारणवश कोई व्यक्ति अभाववाला जन्म जाता है। यह अभाव अंगों की न्यूनता, शारीरिक क्षमता की कमी, मानसिक विकास की कचावट या अन्य कोई भी हो सकती है। शायद ईश्वर यह सोचता होगा कि जिन मनुष्यों के पास सर्वांगता है, सर्वक्षमता है तथा सर्वसुलभता है वे इस कमी को पूरा कर देंगे। यह सोचकर परमात्मा निश्चिंत हो जाता होगा। उसे अपने समर्थ पुत्रों पर पूर्ण विश्वास है तथा अपेक्षा भी। हम अधिकतर समर्थ संतानें हैं–प्रभु की। हमारा परम कर्त्तव्य है कि जो दिव्यांग है, मन्दबुद्धि है या भौतिक साधनों की सुविधाओं से वंचित है, उनकी यथाशक्ति पूर्ति करें। यह सेवा का कार्य परमात्मा के कार्य में सीधा सहयोग है, तथा उनकी अपेक्षा पर खरा उतरने का अवसर भी है। हम सभी इस भावना को मन में बैठा लें तो कोई भी पीड़ित न रहेगा, कोई भी उपेक्षित नहीं होगा, और किसी को भी अभावों से जूझना नहीं पड़ेगा। इसे ही शास्त्रज्ञों ने कहा है – नर सेवा, नारायण सेवा।

कुछ काव्यमय

सेवा तो कर्त्तव्य है,
ना कोई अहसान।
सेवाहित प्रभु ने किये,
धरती पर इंसान।।
सेवा है इक भावना,
मन की एक हिलोर।
सेवा प्रभु से मिलन है,
उनसे बंधी है डोर।।
दया, धर्म, करुणा करे,
सब सेवा में लीन।
हर कोई सेवा करे,
कौन रहेगा दीन।।
सेवा करने के लिए,
ना मुहूर्त को देख।
हर मानव के हाथ में,
निर्मित सेवा रेख।।
सेवा के सद्कार्य को,
कल पर कभी न टाल।
हो सकता होवे नहीं,
मन में रहे मलाल।।

अपनों से अपनी बात

शरीर रूपी गाड़ी का ब्रेक है मन

एक शिष्य अपने गुरु के पास जाकर अत्यन्त विनीत भाव से बोला– गुरुदेव! आप मुझे ऐसा मंत्र दें, ताकि देवता मेरे वश में हो जाएं। गुरू ने कहा– जरूर दूंगा, पर पहले यह बताओ कि क्या तुम्हारे घर में नौकर–चाकर हैं? शिष्य ने कहा– 'हाँ', दो–पांच हैं। गुरु ने फिर पूछा– क्या वे तुम्हारी आज्ञाओं का अक्षरशः पालन करते हैं? वह बोला– सब कामचोर हैं। काम न करने का बस बहाना ढूंढते रहते हैं। क्या परिवार तुम्हारे वश में है? नहीं, सब अपना स्वार्थ साधते हैं। तुम्हारी पत्नी तो तुम्हारे वश में है? कहां, गुरूदेव! कल ही मैंने उसे कहा था कि– पीहर जाना है तो दो–चार दिन बाद जाना, पर वह तो तत्काल चल पड़ी। गुरू ने फिर कहा– चलो, सब को जाने दो। मुझे यह बताओ कि तुम्हारा मन तो तुम्हारे वश में होगा ही? नहीं गुरूदेव ! मन वश में कहां है। यह तो बड़ा चंचल है। एक जगह स्थिर ही नहीं रहता। गुरू ने कहा– अरे भाई! जब नौकर–चाकर, परिवार, पत्नी और तेरा मन भी तेरे वश में नहीं है तो देवता तुम्हारे वश में कैसे होंगे ? सब से पहले अपने मन को साधो, वश में

करो। मन जिसके वश में हो जाता है, देवता भी उसे नमन करते हैं।

बन्धुओं! मन भी एक अस्त्र की तरह है। जिसने इसका सदुपयोग किया, उसे यह सही दिशा की ओर अग्रसर करेगा और गलत उपयोग पर भ्रमित कर जीवन को बर्बाद कर देगा। मन एक ब्रेक की तरह है। यदि गाड़ी गलत दिशा में जा रही है तो वह तत्काल उसे रोक देता है। यदि ब्रेक फैल हो गया तो गाड़ी गलत दिशा में टकराकर नष्ट हो जाती है। वहां यही स्थिति मन की है। मन यदि सही दिशा में चलता है तो वह वहां तक पहुंचा सकता है, जहां से आनंद–गंगा की धारा प्रवाहित होती है। मन द्वारा ईश्वर को प्राप्त नहीं किया जा सकता, अलबत्ता ईश्वर के द्वार तक पहुंचा जरूर जा सकता है। ठीक वैसे ही, जैसे हम गंगा के किनारे तो पहुंच जाएं, लेकिन गंगा में अवगाहन के लिए किनारा छोड़ना ही पड़ता है। जैसे मैंने कहा कि मन हमारा बड़ा अस्त्र है। यह मानव को आलोक और अंधकार दोनों ओर मोड़ सकता है। वह शत्रु भी बन सकता है और मित्र भी। यह मनुष्य पर निर्भर करता है कि वह इसका उपयोग किस तरह करे। मन पर यदि हमारा वश है तो वह निश्चित रूप से सही दिशा में गमन करेगा। सही दिशा में यह अग्रसर हो, इसके लिए हमें योग और संयम का अनुसरण करना होगा। इससे जागृत हुई चेतना मन की साक्षी बन जाती है और मन चेतना के संकेतों पर चलने लगता है। यदि मन की दिशा सही है तो हमें सामने ही आनंद का द्वार दिखाई पड़ेगा। यदि दिशा गलत है तो सिवाय मुसीबातों के कुछ भी हासिल नहीं होगा। जो मन से हार जाता है या उसकी दासता को स्वीकार कर लेता है, वह विषय भोगों की ओर बढ़कर जीवन को नष्ट कर बैठता है। जिसने मन को जीत लिया, उसने जीवन के सत्य को पा लिया। सच्चे और अच्छे व्यक्तियों का संग करें, मन को समर्थ संकल्प में स्थित रखें, उसे विपरीत न जाने दें। व्यर्थ देखना, सुनना और सोचना सिर्फ समय गंवाना है, कुल मिलाकर संयम से ही मन वश में हो पायेगा। –**कैलाश 'मानव'**

अनोखा कर्मचारी

बात 1947 की है। लेस्टर वण्डरमेन नाम का एक व्यक्ति मेक्सवेल सेकिम एण्ड कम्पनी में काम करता था। यह एक विज्ञापन एजेन्सी थी। एक दिन एजेन्सी के मालिक को लगा कि कम्पनी के मुनाफे का अधिकांश हिस्सा तो कर्मचारियों में ही चला जाता है, अगर वह कर्मचारियों की छंटनी कर देगा तो निश्चित ही उसे अधिक फायदा होगा। अपनी योजनानुसार उसने कई कर्मचारियों को निकाल दिया, लेस्टर वण्डरमेन भी उनमें से एक थे।

नौकरी से निकाले जाने के बाद भी वह एजेन्सी में आकर काम करते रहे। दूसरे कर्मचारी अक्सर उनसे कहते – जब तुम्हें यहाँ से निकाल दिया गया है तो फिर, यहाँ काम क्यों कर रहे हो?

"मैं यहाँ बिना तनख्वाह के काम कर रहा हूँ। मुझे लगता है कि मैं इस विज्ञापन एजेन्सी के मालिक से बहुत कुछ सीख सकता हूँ।" वण्डरमेन ने उत्तर दिया।

एजेन्सी के मालिक वण्डरमेन को देखकर भी नजरअंदाज करते रहे। उन्होंने एक महीने तक वण्डरमेन को अनदेखा किया एवं तनख्वाह भी नहीं दी, लेकिन वण्डरमेन ने फिर भी हार नहीं मानी और वे काम करते रहे। एक दिन हार कर कम्पनी के मालिक वण्डरमेन के पास गए और बोले –मैंने पहले कभी ऐसा व्यक्ति नहीं देखा, जिसे काम तनख्वाह से ज्यादा प्रिय हो। वण्डरमेन ने वहीं पर काम करके विज्ञापन की अनेकों बारीकियों को सीखा। जब उन्हें वहाँ काम करते–करते बहुत समय बीत गया तो, उन्होंने अपनी समझ और अपने तरीके से विज्ञापन बनाने शुरू कर दिए।

इसके पश्चात् वह विज्ञापन की दुनिया में इस कदर छा गए कि उन्हें इस क्षेत्र में सदी का सबसे सफल व्यक्ति माना गया। आज भी लोग उन्हें 'Father of Direct Marketing' के रूप में जानते हैं। अतः हम सभी को शुरूआती असफलता के बावजूद मेहनत, लगन, आस्था और विवेक के काम करना होगा, क्योंकि सफलता अवश्य मिलेगी।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

इन्हीं दिनों अमेरिका के नार्थ कैरोलीना प्रान्त की एक दम्पती का अस्पताल में आना शुरु हुआ। इनके नाम मनु भाई व जया बेन थे। दोनों शिविरों में भी निरन्तर भाग लेते थे। वे कैलाश के कार्यों से अत्यन्त प्रभावित हो गये। जया बेन का तो कैलाश के प्रति इतना स्नेह उमड़ा कि वे एक दिन उसे कह पड़ी –आप मेरे भाई जैसे हो। कैलाश यह सुन गद्गद् हो उठा, उसने कहा –अपनी बात से यह "जैसे" का तमगा हटा दो, मैं भाई जैसा नहीं वरन भाई ही हूं।

जया बेन ने कैलाश को अमेरिका आने का निमन्त्रण दिया। कैलाश को भी मन की इच्छा थी कि अमेरिका का इतना नाम है, एक बार तो वहां जाना ही चाहिये, उसने जया बेन का प्रस्ताव तुरंत स्वीकार कर लिया मगर एक शर्त डाल दी। उसने कहा वह अमेरिका आने को तैयार है मगर इस शर्त पर कि वह एक महीना उसके साथ रहे और धन संग्रह में मदद करें। जया बेन इसके लिये राजी हो गई, उसने कहा–धन संग्रह के लिये न्यूयार्क ज्यादा उचित रहेगा। कनेक्टिकट में जया बेन की बहन रहती थी, हालांकि यह अलग राज्य है मगर है न्यूयार्क का ही हिस्सा। हमारे यहां जिस तरह नोयडा उत्तरप्रदेश में होते हुए भी दिल्ली का हिस्सा है ठीक उसी तरह। कैलाश ने अमेरिका यात्रा हेतु डॉ. अग्रवाल को तैयार किया। वे अत्यन्त सरल व्यक्ति थे, कैलाश की बात आसानी से मान गये, उनके कई शिष्य न्यूयार्क तथा अमेरिका के विभिन्न भागों में नामी गिरामी डॉक्टर थे। वीजा वगैरह की औपचारिकताएं पूरी हो गई तो मनु भाई से सलाह कर तिथियां तय कर ली गई और टिकिट खरीद लिये।

कैलाश पहली बार अमेरिका जा रहा था। उसके मन में ढेर सारी जिज्ञासायें थी। एक अनजानी उद्विग्नता से मन संतप्त था मगर डॉ. अग्रवाल का सान्निध्य उसके लिये राहत सिद्ध हो रहा था। दिल्ली से न्यूयार्क की उड़ान के दौरान, विमान में उसकी बगल की सीट पर एक व्यक्ति बैठा था। कैलाश का स्वभाव है कि सबसे बातचीत करता है, अभिवादन करता है। अपने सहयात्री से उसने बातचीत करने की कोशिश की तो उसे लगा जैसे यात्री बात को लेकर उदास है। कैलाश से रहा नहीं गया, वह पूछ ही बैठा कि आप इतने उदास क्यूं लग रहे हैं, क्या बात हो गई ?

अंश - 145

भगवान से भिन्न कुछ भी नहीं

मनुष्य को जो ज्ञान श्रीमद्भागवत जी के पारायण और श्रवण से प्राप्त होता है, वह जीवन को सार्थक बना देता है। इसी उद्देश्य से संस्थान पिछले कई वर्षो से देश के नगर, कस्बे और ढाणियों में श्रीराम, श्रीशिव और श्रीकृष्ण कथाओं के आयोजन नियमित रूप से करता रहा है। मई माह में मुरैना व वृदांवन धाम में श्रीमद्भागवत जी पारायण के सप्त दिवसीय भव्य आयोजन हुए।

मां बहरारा मंदिर, कोंडा

मुरैना (मध्यप्रदेश) की कैलारस तहसील के मां बहरारा मंदिर में 14 से 20 मई तक श्रीमद्भागवत कथा का प्रतिदिन तीन घण्टे पारायण हुआ। जिसमें दूर दराज गांवों से भी श्रदालुओं का सैलाब उमड़ पड़ा। 'संस्कार चैनल' पर सीधा प्रसारण होने से लोगों ने घर बैठे ज्ञान–गंगा का सानिध्य प्राप्त किया। व्यास पीठ पर बिराजी पूज्य श्री रमाकांत जी महाराज ने कहा कि श्रीमद्भागवत जी के पारायण–श्रवण से जीवन–धर्म सम्बन्धी नाना प्रकार के प्रश्नों का उत्तर सहज प्राप्त होता है, जिससे मानव धन्य होकर अपने जन्म को सार्थक कर लेता है। कथा सौजन्यकर्ता श्री विश्वंभर दयाल जी धाकड़ परिवार (कोंडा) ने व्यासपीठ व श्रीमद्भागवत जी की आरती कर अपने आपको धन्य किया।

ब्रजसेवा धाम, वृंदावन

राधागोविन्द मंदिर, श्री ब्रज सेवाधाम वृंदावन (उत्तरप्रदेश) में 10 से 16 मई तक श्रीमद्भागवत ज्ञान कथा यज्ञ का आयोजन सानन्द सम्पन्न हुआ। जिसका 'आस्था चैनल' से सीधा प्रसारण हुआ। कथा व्यास पूज्य बृजनंदन जी महाराज ने श्रीमद्भागवत जी के पारायण व श्रवण की महता बताते हुए कहा कि यह जीवन को सार्थकता प्रदान करने वाला ग्रंथ हैं। उन्होंने कहा कि मानव जीवन का एक मात्र लक्ष्य है–स्वकल्याण अर्थात् जन्म–मरण के बंधन से मुक्त होना अथवा भगवत प्राप्ति करना। जीवन में समग्र सफलता एवं शान्ति केवल आध्यात्मिक विचारों व चिंतन से ही संभव है। श्रीमद्भागवत से भिन्न जो कुछ प्रतीत होता हे, वह मिथ्या ही है।

दाना मेथी का पानी पीने से दूर होगी पेट की गर्मी

पेट की गर्मी बढ़ने से कब्ज, दस्त, डायरिया, ब्लोटिंग, उल्टी जैसी परेशानी होने लगती है। एक गिलास पानी में मेथी डालकर कुछ घंटों के लिए छोड़ दें। अब इस पानी को पीएं। मेथी के बीज पानी में उबालकर तापमान सामान्य होने तक बाहर फिर कुछ देर फ्रिज में रखें। ठंडा होने पर पी सकते हैं। करीब 20 मिनट तक पैरों को ठंडे पानी में डुबोकर रखें। ज्यादा ठंडक के लिए इसमें बर्फ के टुकड़े या पेपरमिंट एसेंशियल ऑयल भी डाल सकते हैं। शीतली प्राणायाम भी कर सकते हैं। पुदीने की चाय भी पी सकते हैं। पेट के ऊपर एलोवेरा जेल लगा सकते हैं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

मुझे निमित्त बना दिया। मेरे को यंत्र बना दिया, मेरे को ईश्वरीय उपकरण बना दिया। और ईश्वरीय उपकरण बन के बहुत राजी हूँ। मेरे साथी राजी है। गिरधारी कुमावत, श्यामजी कुमावत, झूंझनू वाली बाई, मनोरमाजी पारीख, कमललालजी पानेरी, बहुत प्रसन्न हुए। हमारे तेजसिंहजी जिनको पिताजी कहकर बोलते थे। अन्तरिक्ष से हमें आशीर्वाद दे रहे हैं। गायत्री शक्तिपीठ के प्रबल भक्त, तेजसिंह जी साहब। सोहनलाल जी पूर्बिया अन्तरिक्ष से हमें आशीर्वाद दे रहे हैं। जिन्होंने तेजसिंहजी की बहुत सेवा की। जहाँ भी सेवा अवसर हुआ सोहनलालजी पूर्बीया भागे दौड़े। और जब में गीतांजली हॉस्पीटल में करीबन साढ़े दस– पौने ग्यारह बजे गया उनसे मिलने हाथ में हाथ ले लिया। वो बेहोश थे ठीक उसी तरह से। जैसे बम्बई के परम् पूज्य आदर्श पुरूश, दानवीर सेठ रतनलालजी डिडवाणिया साहब बेहोश थे।

ये दोनों घटनाएं एक समान घटित हुई। पूर्बिया साहब के हाथ में मैंने हाथ रखा, उन्होंने भी हाथ पकड़ लिया। परन्तु पूर्बिया साहब और डिडवाणिया साहब की जो घटनाएं घटी उनमें एक अपनत्व था। परम् पूज्य डिडवाणिया साहब को जब मैंने कहा– बाबूजी मैं चलूं, उन्होंने हाथ को कसकर पकड़ लिया। मुँह से बोल तो नहीं सकते थे। अवरूद्ध हो गयी थी वाणी। वाणी कहीं खो गयी थी।

बोलना चाहते तो भी वो बोल नहीं पाते। देखना चाहते देख नहीं पाते। सुनना चाहते सुन नहीं पाते। इन्द्रियों को क्या हो जाता है? पूर्बिया साहब ने कसकर मुझे पकड़ लिया। मेरे को सन्देश दे दिया , अभी मत जाईये। मैंने कहा– बाबूजी में नहीं जा रहा हूँ, मैं यहीं बैठा हूँ। उसके बाद भी करीबन पन्द्रह मिनट रतनलाल जी डिडवाणिया साहब ने हमें मूक आशीर्वाद दिये। और इधर सोहनलाल जी पूर्बिया साहब की अंगुलियाँ कुछ क्षणों में एकदम ढीली पड़ गई। हाथ छूट गया। परमानंद भवन आ गया। पन्द्रह मिनट बाद खबर मिली, सोहनलालजी पूर्बिया नहीं रहे। हो सकता हो, अंगुलियाँ छूटी हो, उसी समय प्राण पखेरू निकले हो। भाइयों– बहनों, ये महान व्यक्तित्त्व।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 498 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023